एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

# अमृत विचार

बरेली

बुधवार, 3 दिसंबर 2025,

PAGE NO, 07, TOP

# सेनानियों ने बरेली की नींव खून-पसीने से सींची तो जनप्रतिनिधियों ने समृद्ध बनाने को किए कार्य

## राममूर्ति ने हमेशा आम जनता को समृद्ध करने को अपना पहला कर्तव्य समझा

20 वर्ष की उम्र में पहली बार देश के लिए जेल गए स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राममूर्ति का बरेली को समृद्ध बनाने में काफी योगदान रहा है। 1941 में बरेली के बहरपुरा में व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू कर राममूर्ति देश को आजादी दिलाने के आंदोलन में कूदे थे। राममूर्ति ऐसे शख्सियत थे कि अंग्रेजों से सत्ता हस्तांतरण के समय 1946 में जनता ने उन्हें भारी बहुमत से उत्तर प्रदेश विधानसभा का सदस्य बनाया। इसके बाद 1968 तक लगातार विधानसभा में अपने क्षेत्र की नुमाइंदगी करते रहे और 1974 में फिर विधानसभा सदस्य चुने गए थे। उन्होंने आचार्य बिनोवा भावे के भूमि दान कार्यक्रम का समर्थन करते हुए अपनी 30 एकड़ कृषि भूमि अनुदान में दान कर दी थी। उन्होंने 19 वर्षों तक मंत्री रहकर बरेलीवासियों की सेवा की। स्वतंत्रता सेनानी राम मूर्ति का जन्म 8 फरवरी 1910 में बरेली स्थित गांव धौरा में जमींदार साहू ठाकुर दास के यहां हुआ था। घर में सबसे छोटे राम मूर्ति की प्रारंभिक शिक्षा बरेली में ही हुई। जबकि उन्होंने स्नातक की शिक्षा वाराणसी स्थित काशी हिंदू विश्वविद्यालय से प्राप्त की थी। राममूर्ति ने परास्नातक की शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय से हासिल की।

स्नातक की शिक्षा के दौरान वाराणसी में राममूर्ति, महामना मदन मोहन मालवीय के संपर्क में आए। मालवीय जी ने उन्हें बालंटियर बनाकर इलाहाबाद कुंभ में सेवा के लिए भेजा। विश्वविद्यालय परिसर के स्वच्छता की जिम्मेदारी भी दी। इन कामों को जिम्मेदारी से करने से राममूर्ति मालवीय जी के काफी करीब आ गए और स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भागीदारी करने लगे। मालवीय जी के निर्देश पर वह वर्ष 1930 में महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन में शामिल होने मुंबई (तत्कालीन बंबई) गए थे। वहां से वापस लौटते समय हमीरपुर में उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। मात्र 20 वर्ष की उम्र में देश की आजादी के लिए राममूर्ति पहली बार गिरफ्तार हुए थे। महात्मा गांधी से प्रभावित राममूर्ति ने उनके सभी आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई थी। मार्च 1932 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान उन्हें गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानी विचित्र नारायण शर्मा के साथ अंग्रेजों ने फिर गिरफ्तार किया था। राममूर्ति ने 1941 में बरेली के बहरपुरा में व्यक्तिगत सत्याग्रह किया। पिता की इच्छा का पालन करते हुए वे हाथी पर बैठकर सत्याग्रह में शामिल हुए। सात जनवरी 1941 को हाथी पर बैठकर वह जुलूस के साथ थाने पहुंचे और वहां अपनी गिरफ्तारी दी।

गांधी जी के आह्वान पर 1942 में शुरू होने वाले भारत छोड़ो आंदोलन से पहले ही अंग्रेजों ने राममूर्ति को गिरफ्तार लिया था। हर बार की तरह इस बार भी उन्हें दो वर्ष से ज्यादा जेल में बिताने पड़े। मधुर और मिलनसार स्वभाव के राममूर्ति को पं. गोविंद बल्लभ पंत, डॉ. संपूर्णानंद, सीबीगुप्ता और सुचेता कृपलानी ने मंत्री बनाकर अपने मंत्रिमंडल में स्थान दिया। राममूर्ति अपनी